ओम् शांति। आत्माओं की प्रीत बनती है अपने पारलौकिक प०पि०प० बाप से। जानते हैं बाबा हमको यहाँ से ले जावेंगे। किसकी आत्मा शरीर छोड़ जाने लगती है तो कितनी मेहनत करते हैं; जैसे सत्यवान–सावित्री की कहानी है ना। उनको आत्मा को पिछाड़ी में लटक पड़ी कि फिर शरीर में आ जाए; परन्तु उनमें ज्ञान तो था नहीं। तुम्हारे में ज्ञान है। हम हर एक की प्रीत बनी है प०पि०प० से। क्यों बनी है? इस दुनिया से मर जाने के लिए। यह प्रीत तो बहुत अच्छी है। इसके लिए आत्मा ने आधा कल्प भक्तिमार्ग की ठोकरें खाई हैं कि अपने शांतिधाम, सुखधाम में जावें। है भी बरोबर। बाप भी कहते हैं अशरीरी बनो, मर जाओ। आत्मा शरीर से अलग हो जाती है तो उनको मर जाना कहा जाता है। बाप समझाते हैं– बच्चे, इस दुनिया अथवा इस बंधन से तुम मर जाओ अर्थात् मेरा बन जाओ। इस पुरानी दुनिया, पुराने शरीर में कोई मज़ा नहीं है। यह तो बहुत छी–2 वैश्यालय है, रौरव नर्क है। तुम बच्चों को कहते हैं– अब मेरे बन जाओ। मैं आया ही हूँ सुखधाम ले जाने, जहाँ दुख का नाम नहीं रहता। इसलिए इस शमा पर खुशी से परवाने बन जाओ। परवाने खुशी से आते हैं ना दूर–2 से। कोई ऐसे होते हैं जो बत्ती जलती तो जन्मते हैं, बुझती है तो मर जाते हैं। दीपमाला पर ढेर छोटे–2 पतले हरे रंग के बहुत होते हैं, बत्ती पर फिदा होते हैं। बत्ती गई, यह मरे। अब यह तो बहुत बड़ी शमा है। बाप कहते हैं, तुम पतंगे मिसल फिदा हो जाओ। तुम तो हो चेतन मनुष्य। जो भी देह के संबंध हैं, यह सब जीते जी छोड़ दो। अपन को आत्मा समझो, मेरे साथ प्रीत रखो। लाडले बच्चे, अब पुरानी दुनिया और इस पुराने शरीर का अभिमान छोड़ मेरे साथ योग लगाओ, खुशी में रहो तो फिर इस शरीर का भान छूट जावेगा। हम आत्माएँ इस दुनिया को छोड़ कर अपने घर जाते हैं। यह दुनिया कोई काम की नहीं है। इससे दिल ना लगाओ। इस दुनिया में तुम बहुत गरीब हो। बाप कहते हैं– बच्चे, अब अशरीरी बनो। हम आत्मा वहाँ शांतिधाम में रहने वाली हैं। अब उस शांतिधाम में कोई जा नहीं सकते हैं जब तक पवित्र ना बनें। इस समय सभी के पर टूटे हुए हैं। सबसे जास्ती पर टूटे हुए हैं गुरुओं, साधुओं के। वह अपन को ही भगवान मान बैठे हैं, तो ले कहाँ जावेंगे? बिल्कुल ही पर टूटे हुए हैं। खुद भी जा नहीं सकते तो तुम्हारी सद्गति कैसे करेंगे? खुद ही दुर्गति में हैं। इसलिए भगवान ने कहा है इन साधुओं का भी मुझे उद्धार करना है। सिर्फ वो समझते हैं, कृष्ण भगवानुवाच्य। शिव है ही अशरीरी। ज़रूर मुख द्वारा समझाना पड़े। प्रजापिता ब्रह्मा के मुख से ही समझावेंगे। मनुष्यों की रचना प्रजापिता ब्रह्मा से ही होती है। यह तो सब जानते हैं। कोई से भी पहले यह दो बातें पूछो तो उनको महसूस हो बरोबर बाप बच्चों को किसलिए रचते हैं। बाप रचते हैं वर्सा देने लिए। ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मणों को रचा है। तुम जानते हो, बाप हमको पढ़ाते हैं, राजयोग सिखाते हैं स्वर्ग का मालिक बनाने लिए। बाप आते ही हैं दुनिया को बदलने, नर्क को स्वर्ग, मनुष्य सृष्टि को दैवी सृष्टि बनाने। वो ही सुख देने आवेंगे ना। भल यहाँ मनुष्य पदमपति हैं, बहुत महल–माड़ियाँ हैं; परन्तु तुम जो पढ़ाई पढ़ते हो उससे तुम बड़ा ऊँच पद पावेंगे। जिस्मानी पढ़ाई वाले समझेंगे, हम बैरिस्टर बनते हैं, हम आई.सी.एस. बनते हैं। तुम्हारी बुद्धि में है, हमको शिवबाबा पढ़ाते हैं विश्व का मालिक बनाने। कितना ऊँच ते ऊँच पद है! सो भी 21 जन्मों लिए। यह पढ़ाई ऐसी है जो 21 जन्म हम कब रोगी नहीं बनते हैं। अकाले मृत्यु नहीं होती; परन्तु किसके लिए? जो परवाने बाप को अपना बनाते हैं। बाप गोद में लेते हैं। गरीब तो साहुकार के बच्चे को गोद में नहीं लेंगे। गरीब के बच्चे साहुकार की गोद लेंगे। अभी सब बिल्कुल गरीब हैं। तुम जानते हो, यह महल–माड़ियाँ आदि सब खतम हो जावेंगी। हम ही विश्व के मालिक बनने वाले हैं। मालिक थे, अब नहीं हैं, फिर मालिक बनेंगे। सारी सृष्टि का मालिक और तो कोई भी नहीं बनते हैं। तुम सारे विश्व के मालिक बनते हो 21 जन्म लिए। सुख तो सबके लिए है। ऐसे नहीं कि राजा की बड़ी आयु होगी, प्रजा की कम

आयु होगी। नहीं। यथा राजा–रानी.... यहाँ तो प्रिंस भी छोटी आयु में मर पड़ेंगे, राजाई ना भी लेवें। बहुत ऐसे भी होते हैं जो जन्मते ही मर पड़ते हैं, राजाई जैसे कि जन्म लेते तक की मिली। अभी तुम बच्चे जानते हो, हम यहाँ बैठे हैं बेहद बाप के आगे। आत्मा शरीर धारण कर पार्ट बजाती रहती है। अभी जानते हैं, हमारी आत्मा का बाप आया हुआ है पुराने बंधन से छुड़ाए, नए संबंध में जुटाने लिए। बरोबर तुम सूक्ष्मवतन, वैकुण्ठ वतन में जाते हो, मिलते–जुलते हो। तुम्हारा कनेक्शन हो गया बेहद का। यह कैसे अच्छा कनेक्शन है! तुम अपने ससुर घर जा सकते हो। मीरा का भी कनेक्शन ससुरघर से था ना। चाहती थी, ससुर घर(वैकुण्ठ) जाऊँ। यह ससुरघर नहीं है। यहाँ तो तुम बिल्कुल गरीब हो। कुछ भी तुम्हारे पास नहीं है। भारत में क्या रखा है? भल गाते हैं– भारत हमारा बहुत ऊँच देश है। था ज़रूर, अभी नहीं है। गाते हैं– भारत हमारा सबसे ऊँचा देश है, सोने का हिन्दुस्तान था, अब नहीं है। जब था, उसकी महिमा करते हैं। अभी तो देखो, सोने की क्या हालत हो गई है! जेवर आदि सब ले लेते हैं। बिचारे छिपा कर रखते हैं, कहाँ डाकू लूट कर ना ले जाए; परन्तु यह है ही डाकुओं का राज्य। वहाँ तो बेशुमार सोना होगा। निशानियाँ भी लगी हुई हैं। सोमनाथ के मंदिर में निशानियाँ हैं। मणियाँ आदि मुसलमानों ने जाकर कब्रों में लगा दी हैं, जो अग्रेज़ लोग ले गए। निशानियाँ लगी पड़ी हैं। तो भारत इतना साहुकार था। अभी देखो, भारत का क्या हाल है! अभी तुम बच्चे जानते हो, हम बाप के बने हैं स्वर्ग का मालिक बनने। बाबा आया हुआ है। आगे भी आया था। शिवरात्रि भी कहते हैं। अब रात्रि कृष्ण की भी कहते हैं, शिव की भी रात्रि कहते हैं। है ज़रा सा फर्क। इन बातों को तुम बच्चे अब जानते हो। कृष्ण दिन में जन्म ले वा रात में ले, इसमें रखा ही क्या है! रात्रि कृष्ण की मनाना वास्तव में रॉंग है। है शिव की; परन्तु बेहद की बात है और है भी शिवभगवानुवाच्य। उन्होंने शिव को भूल कृष्ण की रात्रि लिख दी है। जब रात पूरी हो तब तो दिन शुरू हो। टाइम भी ऐसा दिखाया है। अब तुम बच्चे जानते हो, कृष्ण जयन्ती में कुछ भी रखा ना है। जयन्ती है तो शिव की। बेहद की रात पूरी हो फिर दिन शुरू होता है। बाप आते ही है, बेहद का दिन बनाने। ब्रह्मा का दिन, ब्रह्मा की रात। ब्रह्मा कहाँ से आया? गर्भ से तो निकला नहीं। ब्रह्मा का माँ–बाप कौन? कितनी विचित्र बात है। बाप एडॉप्ट करते हैं। इसलिए गाया जाता है तुम मात–पिता.... हम सब आत्माएँ आपके बच्चे हैं। आत्मा ही पढ़ती है, इन ऑरगन्स से सुनती है। बच्चों को यह यादगिरी भूल जाती है, देह–अभिमान में आ जाते हैं। बाप समझाते हैं, तुम आत्माएँ अविनाशी हो, यह शरीर विनाशी है। बताओ, 84 जन्मों का पार्ट आत्मा में नूँधा हुआ है या शरीर में? पुनर्जन्म कौन लेते हैं? ज़रूर कहेंगे, आत्मा दूसरा शरीर लेती है पार्ट बजाने। आत्मा जानती है, हमने 84 जन्म लिए हैं। बाप ने समझाया है– मुझे याद करो। यह तुम्हारा अंतिम जन्म हीरे जैसा है। जो बाप के बनते हैं उनका हीरे जैसा जन्म है। तुम्हारी आत्मा शरीर साथ प०पि०प० की बनी है। अब आत्मा हीरे जैसा बनती है अर्थात् प्युअर सोना बनती है, 24 कैरेट। अभी कोई कैरेट ना रहा है। सोना चमकता है ना! मुलमा बनाए देते तो कोई कैरेट नहीं रहता। अभी तुम बच्चों को सन्मुख बैठ सुनने से मधुबन की भासना आती है। यहाँ ही मुरली बजती है। भल बाबा कहाँ जाता भी है; परन्तु इतना मज़ा नहीं आवेगा; क्योंकि मुरली सुनकर फिर मित्र–संबंधियों आदि माया के राज्य में चले जाते हो। यहाँ तो तुम (भट्)ठी में रहते हो। यहाँ तुम राजाई प्राप्त के लिए पढ़ रहे हो। यह तुम्हारे रहने के लिए हॉस्टल है। घर के भी और बाहर के भी कितने आकर रहते हैं। तुम यहाँ स्कूल में बैठे हो, गोरख धंधे आदि कुछ भी नहीं हैं। आपस में ही चिटचैट करते रहते हैं, और कोई बात सुनते नहीं हो। एक/दो को यही ज्ञान की प्वाइंट्स सुनाओ, रिपीट कराओ। प्वाइंट्स याद करनी और करानी है। यहाँ तुम

को जो सुख मिलता है, धारणा होती है वो बड़ा अच्छा है। हॉस्टल में थोड़े दिन के लिए आते हो, कोई 8 दिन, कोई 10–12 दिन लिए आते हैं। यह (भट्)ठी है। बाप से सुनते रहते हैं। दिल में यह निश्चय हो जाए, हम मात–पिता साथ घर में बैठे हैं। यहाँ नशा अच्छा चढ़ता है, साथ बैठते हैं। बुद्धि समझती है घर में बैठे हैं। मम्मा–बाबा और बच्चे घर में बैठे हैं। यह ईश्वरीय घर है। दर कहो, घर कहो, एक ही बात है। दर आया तो घर भी आया। दर से अंदर घर में आया। तो यहाँ यह ईश्वरीय घर है। भाई–बहनें हैं, मिक्सचर नहीं हैं; इसलिए इनको इन्द्रप्रस्थ भी कहते हैं। सभी ज्ञान सब्ज परियाँ हैं नम्बरवार। नाम रख दिए हैं, है शिवबाबा की दरबार। यहाँ से तुम बाहर जाते हो तो तुम्हारी अवस्था में रात–दिन का फर्क पड़ जाता है। सर्विस पर जाने वालों की बुद्धि में तो यही रहता है कि सर्विस करें। बाप समझाते हैं, अपनी जाँच पूरी करते रहो– कहाँ तक हमारे बंधन टूटे हुए है? क्या युक्ति रचें जो हमारे बंधन जल्दी टूट जाएँ और हम जाए अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान दूसरों को करें? किस युक्ति से अपन को इस जेल से छुड़ावें? फिर बाबा कहाँ भी सर्विस पर भेजे– यहाँ जाकर समझाओ, यह सर्विस करो और कृपा करके दिल अंदर एक बात पक्की रखो। यह सब पर रहम करो समझाने का– पतित–पावन प०पि०प० शिव से तुम्हारा क्या संबंध है? पतित–पावन कहने से परमात्मा तरफ ही बुद्धि जाती है। बाबा रोज़ कहते रहते हैं– छोटा बोर्ड बनाए उस पर यह लिख दो; परन्तु किसकी बुद्धि में नहीं बैठता है, युक्ति रचते नहीं। बाबा ने बहुत अच्छा समझाया था, एक भी बनाकर ना आया। लिखत बहुत अच्छी है। बहुत फर्स्ट क्लास छपवाना है; परन्तु कोई प्रबंध ना होता है। कोई ऐसा नहीं, जो अटेंशन दे और झट बनवावे। है बहुत सहज। ऐसी बुद्धि कोई की नहीं जो काम करके दिखावे। माया बहुत गफलत में ले जाती है, डायरैक्शन अमल में नहीं ले आते हैं। ऐसा बोर्ड तो अपने घर में भी लगा दो तो तुम्हारे पास बहुत आवेंगे। इस पर समझाना तो बहुत सहज है– वो तुम्हारा डाडा है, यह बाबा है। वर्सा तुमको उससे मिलता है। ऊपर में त्रिमूर्ति भी लगा हुआ हो। त्रिमूर्ति (ना) लगाए तो भी हर्जा नहीं है। त्रिमूर्ति में नीचे वाले अक्षर बहुत अच्छे हैं। पतित–पावन प०पि०प० शिव से क्या संबंध है? प्रजापिता ब्रह्मा से क्या संबंध है? कितना सहज है। बाबा बहुत सिम्पल आइडिया देते हैं; परन्तु किसकी बुद्धि में नहीं बैठता कि बाबा को कुछ बोर्ड आदि बनाकर दिखावें। छपाने में भी देरी नहीं लगती है। खर्चा तो गवर्मेन्ट देती है। घर में सिर्फ यह बोर्ड लिखा हुआ हो। बूढ़ी–2 माताएँ भी इन पर अच्छा समझा सकती है– निराकार प०पि०प० है हम आत्माओं का बाप, उनसे वर्सा मिलता है। हाँ, 100 से कोई 1–2 निकलेंगे। अगर तुम काम ही ना करेंगे तो सर्विस क्या होगी? एक–2 अक्षर से तुम कोई का जीवन हीरे जैसा बना सकते हो; परन्तु पता नहीं माया बुद्धि को क्या कर देती है, सर्विस करने ना देती। जितना तुम ज़ोर से पुरुषार्थ करते हो उतना फिर ज़ोर से माया बुद्धि को ताला लगा देती; क्योंकि सर्विस पर ध्यान नहीं। यह भी नहीं समझते, बाबा कहते हैं, ज़रूर इसमें कल्याण होना होगा। यह ख्याल नहीं आता तो गोया शिवबाबा को ही उड़ा देते हैं। साधारण तन में है ना! कैसे समझें, इनमें प०पि०प० आते हैं। बच्चों की भी बुद्धि में पूरा नहीं आता है, उछलते नहीं हैं; इसलिए ठण्डी सर्विस होती है। बिचारों का कल्याण नहीं करते हैं। बाबा तो घर–2 नहीं जावेंगे। बाबा देखते हैं, माया बिल्कुल सुस्त बना देती है। 5–10 को लाया, बस, समझते हैं कमाल की! खुद ब्राह्मणी भी ऐसी बुद्धू है। बाप के पास तो खुशी में डांस करते आना चाहिए। विलायत से मुसाफरी कर आते हैं तो कितनी खुशी होती है। दर से अंदर घुसते ही एकदम गले लग पड़ते हैं। यह तो सभी दुखों से छुड़ाने वाला बाप है। इससे

कितना लव होना चाहिए! कितना याद आना चाहिए! तुम बाप को भूल जाते हो, बेहद (के बाप) का कुछ मानते नहीं। बाबा गुप्त आए कितनी बच्चों को अच्छी–2 बातें सुनाते हैं। बुढ़ियाँ भी इस पर घर में किसको समझा सकती है। कहेंगे– वाह! ऐसे बाप से तो ज़रूर स्वर्ग का वर्सा मिला होगा। रात–दिन युक्तियाँ निकालनी चाहिए– कैसे किसको समझावें। यह तुम्हारा बोर्ड देखकर बहुत समझने लिए आवेंगे। इनमें युक्ति बहुत अच्छी है। सर्वव्यापी के ज्ञान से जाग उठेंगे। बाबा जगाने की युक्ति बताते हैं। बड़े–2 स्थानों पर यह बोर्ड लगाओ। ऐसे नहीं कि एक कान से सुना, दूसरे कान से निकाल दि(या), बाहर गए तो धंधेधोरी में लग गए। खलास। काम करने वाला कोई नहीं। प्रदर्शनी बन रही है। उसमें भी पहले–2 यह समझाना है पतित–पावन प०पि०प० शिव से क्या संबंध है? बिल्कुल साफ अक्षरों में हो, जो समझाने वाले अच्छी रीत समझा सके। प्रदर्शनी बनाने में भी, किसको समझाने में भी बहुत अच्छा माथा चाहिए। छोटे–2 घोड़े, हाथी, पता नहीं क्या बना देते हैं, तो मनुष्यों की बुद्धि उन खिलौनों में चली जाती है। पहले तो मुख्य बात समझाए लिखा लेना चाहिए, बरोबर बाप है, जिससे यह बी.के. वर्सा लेती है। लिखा लेना चाहिए। बाकी हँसी–कुडी में ही ध्यान चला जाता है। जैसे कविता सुनाते हैं, अपना हुनर दिखाते हैं। यह ज्ञान तो यहाँ सबको है ना। तुम बच्चों को तो सर्विस बहुत अच्छी करनी है। सबका कल्याण करना है। ऐसे नहीं कि सिर्फ राय निकाली फिर सो जाना है। बहुत सहज कर बनाना है, ताकि पिछाड़ी में इशारे से समझ जाएँ। पिछाड़ी को वृद्धि जास्ती होगी तो इशारे से समझते जावेंगे, तुम ताकतवान होते जावेंगे। अंदर कोई खराबी ना रहनी चाहिए। सुन्दर छोकरी देख कइयों का माथा ही खराब हो जाता है। देह–अभिमान में आए कुमारी से बातें करने (लग पड़ते) हैं, नाम बदनाम कर देते हैं। ऐसे (भी) बहुत हैं। सभागे और निभागे भी होते हैं ना। सभागे बाप की नॉलेज को धारण करेंगे, निभागे कहेंगे– हम तो शादी करेंगे। बाबा समझाते हैं, तूफान बहुत आवेंगे, कर्म इन्द्रियों से ना करना है, नहीं तो पद भ्रष्ट हो पड़ेगा। नाम बदनाम कर देते हैं, दिल खाती भी है। शिवबाबा तो सब जानते हैं– हम क्या–2 करते हैं। विकर्म करेंगे तो शिवबाबा अच्छी तरह ख(ाल) उतारेंगे। छिपाते बहुत हैं। कब भी बुरा काम होता है तो लिख कर भेजना है, नहीं तो वृद्धि होती जावेगी। श्रीमत पर चलना है, नहीं तो अपना पद भ्रष्ट कर देंगे। ऐसी–2 मिसटेक्स करने से फिर बहुतों पर सितम आ जाते हैं, अख़बारों में पड़ जाता है। ऐसा क्यों लिखना चाहिए, अंदर आने की मनाह है। तुमको लिखना है– भाई–बहनों, आकर समझो। तो खुला होना चाहिए ना! बाप समझाते हैं, खबरदार रहो। शिवबाबा तो हाज़राहजूर है ना, जो तुम्हारे विकर्म को जानते हैं। बाप से तो पूरा वर्सा लेना चाहिए। एक–2 मुरली 10 बार पढ़नी चाहिए। कई बच्चे तो मुरली पढ़ते ही नहीं तो और को क्या समझावेंगे! माया सौभाग्य के बदली दुर्भाग्य बना देती है। बाबा समझाते हैं– बच्चे, जल्दी करो, टाइम थोड़ा है। बाप को और सृष्टि–चक्र को अच्छी रीत याद करना चाहिए। बाप और वर्सा याद रहे तो तुम्हारा चेहरा खिलेगा। अच्छा, मीठी–2 सीताएँ, जो रावण के बंधन से छूट राम के संबंध में जाती है, ऐसे मीठे–2 पुरुषार्थी बच्चों को मात–पिता का यादप्यार। ॐ

बोर्ड का मैटर :– बहनों और भाइयों! सर्व का पतित–पावन, सद्गति दाता, परमप्रिय, परमपिता परमात्मा शिव वा रुद्र से आपका क्या संबंध है? प्रजापिता ब्रह्मा से आपका क्या संबंध है? इस पहेली को समझने से सेकेण्ड में फिर से ईश्वरीय जन्म सिद्ध अधिकार सतयुगी विश्व का, पवित्रता, शांति, सुख–सम्पत्ति का अटल, अखण्ड, जीवनमुक्त, सूर्यवंशी–चंद्रवंशी दैवी स्वराज्य पद 21 जन्मों लिए पा सकते हो होवनहार महाविनाश के पहले। प्रजापिता ब्रहमाकुमार–कुमारियों का ईश्वरीय विश्व विद्यालय।

रिकॉर्ड :– महफिल में जल उठी शमा.... ॐ पिताश्री 11/7/64

ओम् शांति। बच्चों को ओम् शांति का अर्थ तो समझाया हुआ है। ओम अर्थात् अहम्। अहम् कौन? आत्मा और मेरा यह शरीर कर्मेन्द्रियाँ हैं। आत्मा का स्वधर्म है ही शान्त, साइलेंस। आत्मा किसकी संतान है? कहेंगे– प०पि०प० की। वह भी साइलेंस है। आत्माएँ साइलेंस वर्ल्ड शांतिधाम में रहती है, फिर पार्ट बजाने टॉकी वर्ल्ड में आती है। अब बेहद का बाप कहते हैं– हे बच्चे, अपने स्वधर्म में रहो, अशरीरी होकर बैठो, बाप को याद करो। उस बाप को शमा भी कहते हैं। अब यह है महफिल पतित मनुष्यों की। इस समय यह पतित दुनिया है, मनुष्य मात्र पतित हैं। समझाया गया है, सतयुग में भारत पावन था, अभी पतित है। गृहस्थ धर्म कहा जाता है या जिसको सुखधाम कहा जाता है। भारत पावन था, अभी पतित है, दुखधाम है। यह चक्र फिरता है। अभी यह है कल्याणकारी संगमयुग, जबकि पतित मनुष्य सृष्टि पर बाप को आना पड़ता है पतित मनुष्य सृष्टि को पावन बनाने। पुरानी दुनिया से नई दुनिया बाप रचता ही बनाते हैं, जिसको प०पि०प० कहा जाता है। सब भक्तों का भगवान एक है। तो बाप कहते हैं, मुझे भी ज़रूर पतित दुनिया, पतित शरीर में आना पड़ता। परमधाम से एक ही बार आना पड़ता है भारत को पावन, दैवी स्वराज्य बनाने। इस वर्ल्ड की हिस्ट्री–जाग्राफी को कोई नहीं जानते; क्योंकि सब नास्तिक हैं। एक भी आस्तिक मनुष्य नहीं। बाप को न जानने कारण निधनके बन पड़े हैं, आपस में लड़ते–झगड़ते रहते। घर–2 में कितनी अशांति है। सतयुग में शांति थी। एक ही धर्म था। भारत अविनाशी खण्ड गाया हुआ है। भारत में, सतयुग आदि में वन ऑलमाइटी अथॉरिटी देवी–देवता राज्य था। सुखधाम था। फिर दुखधाम कैसे बना? यह कोई नहीं जानते। ज्ञान है ब्रह्मा का दिन, भक्ति है ब्रह्मा की रात। सन्यासी लोग कहते हैं– ज्ञान, भक्ति और वैराग। अब वे तो घर–बार छोड़ जंगल में चले जाते हैं, वैराग आ जाता है। वह है रजोगुणी सन्यास, यह है सतोप्रधान सन्यास। इस पाप आत्माओं की दुनिया में एक भी पुण्यात्मा नहीं है। तो यह खेल सारा भारत पर है। भारत सोने की, हीरे की चिड़िया थी। भारत में हीरे और सोना बहुत अथाह थे, सोने के महल बनते थे और हीरे–जवाहरों की जड़ित होती थी। अभी तो भारत कौड़ी जैसा बना हुआ है। फिर इनको हीरे जैसा बाप ही बनाते हैं। तुम जानते हैं, हम मनुष्य से देवता बन रहे हैं। अभी वह बाप पतितों की महफिल में आए हैं। साधु–संत, महात्मा, ऋषि–मुनि सब पतित हैं। समझते हैं, पतित–पावनी गंगा है। खुद और अपने जिज्ञासुओं अथवा फॉलोअर्स को ले जाए स्नान करते हैं पाप धोने। फिर ये कोई पापात्मा से पुण्यात्मा नहीं बनते, फिर–2 साल ब साल जाकर गंगा स्नान करते हैं। साधु–संत कोई भी पावन नहीं हैं। जब तक पावन बनाने वाला बाप न आए तब तक पावन बन न सके। पावन बनाते हैं गीता के भगवान। वह भगवान तो सभी आत्माओं का बाप एक है। ऐसे नहीं, सब भगत भगवान हैं वा सर्वव्यापी भगवान है। यह तो हुआ भगवान की ग्लानि करना। कहते, कुत्ते–बिल्ले, पत्थर–ठिक्कर सबमें परमात्मा है। बाप कहते हैं, कितनी ग्लानि करते हैं; इसलिए यदा यदा...। यह भारत के लिए ही गाया हुआ है। जो बाप आकर भारत को हीरे जैसा बनाते उनकी कितनी निंदा करते हैं और ऋषि–मुनि सब कहते आए– रचता और रचना बेअंत हैं अथवा नेती–2, हम नहीं जानते और आज कलियुग के सन्यासी लोग फिर कह देते– परमात्मा सर्वव्यापी है। बाप अब कहते हैं, ऐसे जब पाप आत्मा बन जाती है तब आकर पापात्मा से पुण्यात्मा बनाता हूँ। सबका सद्गति दाता है ही एक बाप। वह ही आकर पतित से पावन बनाए, लायक बनाते हैं। बच्चों को वर्सा मिलता है। लौकिक बाप से मिलता है अल्प काल का वर्सा। बेहद का बाप कहते हैं, मैं 21 जन्मों का वर्सा देता हूँ– पवित्रता, शान्ति–सुख का। लौकिक बाप दे न सके। वह बाप भी है, शिक्षक भी है, ज्ञान का सागर भी है। बाप की महिमा बड़ी ऊँच है! मनुष्य सृष्टि का बीजरूप भी है। यह मनुष्य सृष्टि वैराइटी धर्मों

का झाड़ है। आदि सनात(न) देवी–देवता धर्म है सतयुग का। उनसे फिर और धर्म इमर्ज होते हैं। अभी तुम ब्राह्मण धर्म के बने हो। इनसे पहले शूद्र धर्म के थे। अभी ब्राह्मण से फिर देवता, फिर सो क्षत्रिय बनेंगे। यह 84 का चक्कर लगाना पड़ता है। सतयुग में भी पहले–2 तुम आवेंगे। गाया भी जाता है– आत्मा परमात्मा अलग रहे बहुकाल...। भक्तिमार्ग में धक्के खाते हैं ना! गीत में भी सुना– चारों तरफ लगाए फेरे फिर भी हरदम दूर रहे अर्थात बाप से मिल न सके। भक्ति है ही दुर्गति मार्ग। अभी है रावण राज्य। इनको डेविल राज्य कहा जाता है। रामराज्य है डीटी राज्य। मनुष्य तो समझते हैं– स्वर्ग–नर्क यहाँ ही है; परन्तु ऐसे हो नहीं सकता। मनुष्य मरते हैं तो कहते हैं, स्वर्गवासी हुआ, तो ज़रूर नर्क में था। तो ज़रूर पुनर्जन्म नर्क में ही लेना पड़े। मनुष्यों की तो अनेक मतें हैं, एक न मिले दूसरे से। अनेक प्रकार की द्वैत मतें हैं। आधा कल्प भारत में होती है दैवी मत, अब है आसुरी मत। आसुरी मत पर यह राजधानी चलती है; इसलिए इररिलीजियस है। गवर्मेन्ट भी धर्म को नहीं मानती, अपने धर्म को भूल गए हैं। इनका नाम ही है– कौरव गवर्मेन्ट। इररिलीजियस, अनराइटियस। अनराइटियस है तो अनलॉफुल भी है। अनलॉफुल है तो इनसालवेंट है। इस समय मनुष्य बिल्कुल पत्थरबुद्धि हैं। भारतवासी जिस भगवान को याद करते हैं उस पारलौकिक बाप को तो जानना चाहिए ना मनुष्यों को! न जानने वाले को नास्तिक, ऑरफन कहा जाता है। सारी दुनिया ऑरफन है, लड़ते–झगड़ते रहते हैं। इसलिए इन्सॉलवेंट गवर्मेन्ट को बाप कल्प–2 आए सॉलवेंट बनाते हैं। अभी भारत कौड़ी मिसल है। इनको हीरे जैसा बनाना है। गाँधी अथवा नेहरू भी चाहते थे, भारत में वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी राज्य, राम राज्य हो। समझते हैं, कोई समय भारत में था, अभी नहीं है; इसलिए राम राज्य की कोशिश करते हैं; परन्तु यह किसी मनुष्य के हाथ में नहीं है। तुम हो ब्राह्मण, प्रजापिता ब्रह्मा की संतान। निराकार आत्माएँ हैं प०पि०प० की संतान। वर्सा मिलता है ब्रह्माकुमार–कुमारियों को। ब्रह्मा को भी वर्सा शिवबाबा से मिलता है। यह भी भाई हो गया। बच्चे सब हैं भाई–2, तो ज़रूर एक बाप होगा सब आत्माओं का। अभी तुम ब्रह्मा की मुखवंशावली ब्राह्मण आपस में भाई–बहन ठहरे। तुमको वर्सा मिलता है डाडे से। डाडे के वर्से पर सब आत्माओं का हक है– चाहे स्त्री, चाहे पुरुष के चोले में हों। लौकिक डाडे का वर्सा सिर्फ बच्चों को मिलता है। यह तो बेहद का बाप है ना। भारतवासियों को सतयुग–त्रेता में बेहद के बाप से 21 पीढ़ी का बहुत सुख मिला हुआ है। तुम 84 के चक्र को अभी समझ गए हो। बाप कहते हैं, मैं गाइड बन आया हूँ तुम सबको ले जाने। तुम ही पहले–2 आए थे, अभी लास्ट में भी तुम हो, फिर पहले–2 तुम ही मनुष्य से देवता बनने वाले हो। देवी–देवता धर्म वाले ही 84 जन्म लेते हैं, फिर नम्बरवार (सबके) कम होते जाते हैं। और धर्म वालों के ज़रूर जन्म कम होंगे। अभी वह आदि सनातन देवी–देवता धर्म नहीं है, वह फिर से स्थापन हो रहा है। तुम जानते हो– इब्राहीम फिर कब आवेगा, क्राइस्ट कितने समय बाद आवेगा। यह वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी मनुष्य ही तो जानेंगे ना! ड्रामा का एक्टर होकर क्रियेटर–डायरैक्टर को न जानें तो उनको इडीयट कहेंगे ना! बुद्धिहीन, अंधे हैं। बाप समझाते हैं, सबसे बड़े ते बड़ा पाप तुम्हारे गुरु करते हैं। वो तुमको और ही डुबोते हैं। मुझ बाप से बेमुख करते हैं, गाली देते हैं। जब ऐसे पाप आत्मा बन जाते हैं तब मैं आकर पुण्य आत्मा बनाता हूँ। जो कल्प पहले बने थे उनका ही सैपलिंग लगा रहा हूँ। सतयुग में था ही एक धर्म। अभी तो कलियुग में अनेक धर्म हैं, पतित आत्माओं की महफिल है। बाप आते हैं सबको पावन बनाने। सद्गति देने वाला वो ही एक है।

माया रावण दुर्गति करती है। इसलिए देवताओं के आगे जाकर गाते हैं– मैं निर्गुण हारे में कोई गुण नाहीं। बाप आए, पतित से पावन बनाए, दैवी गुणों वाला बनाता है। अभी तुम दैवी गुण धारण करते जाते हो, फिर भारत में दैवी राज्य बन जावेगा। अभी यह दुनिया बदल रही है। उन्हों का है हद का वैराग, यह है बेहद का वैराग। तुम सारी पुरानी दुनिया को भूल अपने बाप को याद कर वर्सा लेते हो। बाप कहते हैं, मुझे याद करेंगे तो इस याद अथवा योग अग्नि से विकर्म विनाश होंगे, तुम विकर्माजीत बनेंगे। बाबा ने समझाया है– जब कोई 4–5 इकट्ठे आते हैं तो फार्म अलग–2 भराओ, तो मालूम पड़े कि तुम किस धर्म के हो। अनेक धर्म, अनेक मत हैं ना! देवी–देवता धर्म वालों को ही तीर लगेगा और कौवे टाँ–टाँ कर उड़ा देंगे। कराची में हमेशा अलग–2 समझाते थे। फार्म भरवाने का कायदा भी ज़रूरी है। सात रोज़ भट्ठी में पड़ना पड़े; क्योंकि महारोगी बन पड़े हैं। (भ्रमरी का मिसाल) तुम सच्चे–2 ब्राह्मण हो। विष्टा के कीड़ों को भूँ–2 कर आप समान बनाना पड़ता है। देवता धर्म वालों की ही सैपलिंग लगेगी। बच्चों को युक्तियाँ भी सीखनी हैं। बोलो, 7 रोज़ जब समझो तब मुलाकात हो सकेगी और तुम पर रंग भी तब लगेगा। तुम सब ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ हो। मनुष्य इतना भी नहीं पूछते, इतने ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ क्या हैं? अरे, प्रजापिता की संतान। तो ज़रूर बी.के.कुमारियाँ कहेंगे ना! क्रिमिनल एसाल्ट हो न सके। बाप आते हैं, छी–2 सजनियों को गुल–2 बनाए स्वर्ग का मालिक बनाने। यह है राजयोग, गॉड फादरली यूनिवर्सिटी। भगवानुवाच्य, तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। और कोई सन्यासी आदि राजयोग सिखलाए न सके। वह हैं महा ठग। सन्यासियों का कोई शास्त्र है नहीं। धर्म के शास्त्र एक तो देवी–देवता धर्म का शास्त्र है– गीता। बाप ने जिस नॉलेज से धर्म स्थापन किया उसको धर्म शास्त्र कहा जाता है। सतयुग–त्रेता में शास्त्रों की दरकार नहीं रहती, फिर बाद में शास्त्र निकलते हैं। जो–2 धर्म स्थापन होते हैं उनका धर्म शास्त्र कहा जाता है। दयानंद ने अभी–2 धर्म स्थापन किया। कितने थोड़े जन्म लिए होंगे! वेद–उपनिषद आदि किस धर्म के शास्त्र हैं? ये सब बाद में बनाए हुए हैं। गीता भी है झूठी; क्योंकि इसमें कृष्ण भगवानुवाच्य डाल दिया है। शिव के बदली कृष्ण का नाम डाल दिया है। बाप जो भारत को स्वर्ग बनाते हैं उनके लिए फिर भारतवासी कह देते– ईश्वर सर्वव्यापी है। देवताओं को भी गाली देने लग पड़ते हैं। कितने कलंक लगाते हैं। कितनी झूठी बातें शास्त्रों में लिख दी हैं। बाप समझाते हैं, भारत के शास्त्र सब दुर्गति को प्राप्त कराते हैं, इनसे बड़ी गंदी रसम निकलती है। वास्तव में तुम सब द्रौपदियाँ हो। दुर्योधन, द्रौपदियों को नग्न करते हैं। अब तुम कहते हो– बाबा, नग्न होने से बचाओ अथवा पतित होने से बचाओ। सन्यासी तो कहते, नारी नर्क का द्वार है। बाप कहते हैं, नारी स्वर्ग का द्वार है। अच्छा (आज सभा में दो नए विजिटर्स आए थे। अतः प्वाइंट्स बहुत करके रिपीट ही थीं) अच्छा, बापदादा का सिकीलधों प्रति गुडमॉर्निंग।

कुरुक्षेत्र में सेन्टर का मकान बदली हुआ है। उसका एड्रेस यह है :–

(B.K. near life insurance office Kurukshetra)

प्राण माँ 17.7.64 को मधुबन में पहुँच रही है। ऐसा समाचार बॉम्बे से आया हुआ है।